भगवान झूलेलाल

सिन्धी परम्परा में भगवान झूलेलाल को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है । भगवान झूलेलाल को भगवान वरुण का अवतार माना जाता है । भगवान झूलेलाल 10 वी शताब्दी में एक धार्मिक परिवार में प्रगट हुए थे । भगवान झूलेलाल का बाल्यावस्था से ही विशेष सिद्विया प्राप्त थी जिससे सिन्धी समुदाय में आशा की किरण जागृत हुई । उनका नाम उडेरोलाल था । इस्लामिक कट्टरपंथ तथा धर्मपरिवर्तन से प्रभावित हिन्दू सिन्धी ईश्वर से अपनी मुक्ति की प्रार्थना करते थे तथा अब उनकी प्रार्थना का उत्तर प्राप्त होने लगा । झूलेलाल का अर्थ है लहरों पर झूलेलाल /सिन्धी जो अधिकांश व्यापार से जुड़े हुए थे उन्हें नाविकों और यात्रियों का रक्षक मानते थे ।

मीरख शाह के इस्लामी शासन से सिन्धी संस्कृति दूषित व विखण्डित हो रही थी । भगवान झूलेलाल से धर्मान्तरण का विरोध किया तथा मिरखशाह को शान्तिपूर्ण तरीके से समझाया कि सिन्धियों को अपना धर्म पालन करने की अनुमति दी जावें । भगवान झूलेलाल ने यह सुनिशचित किया कि कुछ भी हो जायें सिन्धी समाज अपनी जड़ों से जुड़ा रहे । शान्ति एवं एकता सिन्धी समाज के लिए उनका मुख्य संदेश था ।

भगवान झूलेलाल का जन्म चैत्र मास को हुआ था अतः सिन्धी समाज उनके जन्म दिन को चैती चॉद के रुप मे मनाता है तथा यह सिन्धी समाज की नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है ।

सिन्धी लोग भगवान झूलेलाल को आध्यात्मिक मार्गदर्शक मानते है । उनकी शिक्षाएं एवं सिद्वान्त समुदाय में आज भी प्रचलित है ।

कुल देवी हिंगलाज माता

सिन्धी व अन्य हिन्दू समुदायों की कुलदेवी हिंगलाज माताजी है । हिंगलाज माता जिन्हें हिंगुना देवी भी कहा जाता है , 51 शक्ति पीठो में से एक है । ये वे पवित्र स्थल है जहां देवी सती के शरीर के अंश गिरे थे । ऐतिहासिक मान्यता है कि सती ने अपने पिता द्वारा भगवान शिव का अपमान करने पर आत्मदाह कर लिया था । शोक से व्याकुल शिव ने उनके शरीर को उठाया और भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उसे टुकड़ों में विभाजित कर दिया।

ऐसी मान्यता है कि सती का सिर हिंगलाज में गिरा था , यह स्थान पाकिस्तान के बलूचिस्तान में स्थित हिंगोना राष्ट्रीय उधान के उबड़ खाबड़ पहाड़ो के बीच स्थित है तथा हिंगलाज माता का पवित्र तीर्थ स्थल है । यह मन्दिर केवल पूजा स्थल ही नही ब्लकि इतिहास व संस्कृति का प्रतीक है , जिसकी जड़े सीमाओं से परे है ।

मन्दिर की उत्पति की सटीक तिथि अज्ञात है , लेकिन माना जाता है कि यह हजारों साल पुराना है , जिससे यह क्षेत्र सबसे पुराने हिन्दू तीर्थ स्थलों में से एक है ।

हिंगलाज माता सिन्धियों की कुल देवी से अधिक उनकी आध्यात्मिक जड़ो और पहचान का प्रतीक है ।

भारत विभाजन के बाद कई सिन्धी भारत व अन्य देशों में चले गये परन्तु अपनी आस्था जिवित रखी है । हिंगलाज वार्षिक यात्रा के दौरान हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही श्रद्वालु शामिल होते है , जो धार्मिक सद्भाव का उत्कृष्ट नमूना है ।

यह मन्दिर कराची से लगभग 250 किमी दूर है तथा इस मन्दिर में कोई तराशी मूर्ति नही है परन्तु देवी को सिन्दूर से लिपटे पवित्र पत्थर के रुप में दर्शाया गया है ।

हिंगलाज माता का तीर्थ स्थल आस्था , दृढता तथा एकता का प्रतीक है ।

संत कंवरराम

संत कंवरराम साहिब एक दिव्यदूत थे जो मधुर व सुरीली आवाज में गीत गाते थे उन्हें आद संत सांई खेताराम साहिब का आर्शीवाद प्राप्त था ।

संत कंवरराम का जन्म उनकी माता तिरथ बाई को संत सांई खेताराम के आर्शीवाद से 13 अप्रेल 1885 को हुआ था । उनकी आवाज इतनी मधुर व सुरीली थी कि आमजन मंन्त्रमुग्ध हो जाते थे । उनकी आवाज की तुलना बुलबुल से की जाती थी । उनकी आवाज में अपार शक्ति व दिव्यता थी ।

कथा के अनुसार संत कंवरराम की वाणी इतनी चमत्कारिक थी कि एक बार बिना यह बताये कि एक बच्चा पहले ही मर चुका है , उनसे शिशु को लोरी सुनाने को कहा गया । कहा जाता है कि लोरी सुनाते ही बच्चा जिवित हो गया ।

कथा के अनुसार संत कंवरराम साहिब राग सांरग गाते थे जो वर्षा से संबधित है , तो बादल घिर जाते थे और भारी वर्षा होती थी । संत सांई कंवरराम साहिब अरदास साहिब एवं पल्लव साहिब का पाठ करते थे ताकि लोगो की शुद्व व सच्ची मनोकामनाएं पूरी हो । उनमें श्रोताओं को घण्टो तक मंत्र मुग्ध करने की क्षमता थी । संत कंवरराम साहिब ने अपने सतगुरु का नाम प्रचारित किया और मीरा भगवान श्री कृष्णा , कबीर व शाह लतीफ की स्तुतियों का उपयोग करते हुए जहां भी गये उनकी प्रशंसा की ।

दुर्भाग्यवश कुछ लोगो ने संत कंवर राम साहिब की गोली मार कर हत्या कर दी ।

संत कंवरराम साहिब एक अलोकिक तथा दिव्य थे । उन्होंने सिन्धी समाज का सच्चा मार्गदर्शन किया ।

सतगुरु स्वामी लीलाशाह महाराज

ब्रम्ह ज्ञानी श्री सतगुरु स्वामी लीलाशाह का जन्म हैदराबाद सिन्ध के एक छोटे से गांव मेहराब चांदनी टण्डा बागा में मार्च 1880 में हुआ था । इनके पिता श्री टोपनदास तोताराम व माता श्रीमती हेमीबाई थे। माता पिता ने बालक का नाम 'लीलाराम' रखा । लीलाराम के 10 वर्ष की आयु में उनके माता पिता का स्वर्गवास हो गया तथा उनके भतीजे श्री लखूमल बालक के संरक्षक बन गये । बालक लीलाराम ने भतीजे का घर , व्यवसाय त्याग कर वैराग्य को अपना

लिया । सत्य की खोज में वे सन्तो के सानिध्य में आयें । इस दौरान वे प्रसिद्व वैदान्त आचार्य श्री कैशवराम टण्डा महम्मद खान के शिष्य बन गये । उनके गुरु को यह ज्ञात था कि वे आध्यात्मिक रास्ते पर बहुत आगे बढ चुके है । गुरु ने अपने शिष्य को ''संत लीलाशाह'' का नाम दिया ।

संत लीलाशाह ब्रम्हचारी थे तथा उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन आमजन की सेवा विशेषकर महिलाओं व बच्चों के जीवन स्तर में सुधार हेतु समर्पित कर दिया । उन्होने दहेज प्रथा , विवाह समारोह में फिजूल खर्च , धुम्रपान तथा शराब के सेंवन के विरुद्व आवाज उठाई । न केवल भारत बल्कि विदेशों में यथा जर्काता , इण्डोनेशिया , होगकोंग व सीगांपुर में भी समाज सुधार व आध्यात्मिकता का बिगुल बजाया ।

सिन्धी भाषा के प्रचार प्रसार का कार्य किया तथा लोगों को जागरुक किया कि मातृ भाषा सिन्धी को नही भूले ।

उन्होने अपने आप को कभी संत नही कहलवाया परन्तु आमजन का सेवक बताया । उन्होनें छोटी – छोटी पुस्तकें लिखकर सिन्धी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया । 4 नवम्बर 1973 को उन्होनें देह त्याग कर निर्वाण प्राप्त किया ।